

जोआओ

जोआओ को पश्चिम अफ्रीका में गुलाम बनाया गया था। पुर्तगाली मालिकों ने फोर्ट एल्मिना के संदर्भ में उस पर जोआओ मीना नाम लगाया, जहां उसे बेचा गया था। जोआओ ब्राजील में एक पुर्तगाली चीनी के बागान में पहुँच गया था। जब वे 1646 में डच ब्राजील भाग गए, तो आगमन पर डच वेस्ट इंडिया कंपनी (WIC) द्वारा उनसे पूछताछ की गई। पुर्तगाल के खिलाफ युद्ध में उनका ज्ञान महत्वपूर्ण था।

पुर्तगाल और डच गणराज्य के बीच संघर्ष यूरोप और दुनिया में कहीं और खेला गया। डच वेस्ट इंडिया कंपनी ने आकर्षक चीनी उत्पादन को ध्यान में रखते हुए पुर्तगाल से ब्राजील के कुछ हिस्सों को जीत लिया। चीनी की खेती गुलाम स्थानीय लोगों और जोआओ जैसे अफ्रीकियों द्वारा की जाती थी।

इस यूरोपीय संघर्ष में अफ्रीकी सम्राट भी शामिल थे। जोहान मौरिट्स, डच ब्राजील के गवर्नर और कांगो के राजा गार्सिया द्वितीय, पुर्तगालियों के खिलाफ अपने आपसी संघर्ष में सहयोगी बन गए। इस सहयोग ने डच ट्रान्साटलान्टिक दास व्यापार की शुरुआत को चिह्नित किया, जिसका जोआओ शिकार बन गया।

रेसिफ़, ब्राज़ील में दास बाज़ार, ज़ाचरियास वैगनर, c. 1637-1641

*कई गुलाम लोगों की बाध्यता के लिए डिज़ाइन किए गए फुट स्टॉक,
c. 1600-1800।*

गुलाम लोग, फुट स्टॉक में विवश, जीन-बैप्टिस्ट डेब्रेट, c.1830।

डच-ब्राज़ील में ऑक्स-ड्रिवेन शुगर मिल, फ़्रांस पोस्ट, 1640।

डर्क विल्ले, फोर्ट एल्मिना में गोल्ड कोस्ट के महानिदेशक, पीटर डी विट, 1669।

गिल्ट सिल्वर बेसिन, गार्सिया द्वितीय से जोहान मौरिट्स को उपहार, 1586।